Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

हिन्दी साहित्य

प्रश्नपत्र-2 (खंड-क)

पद्य साहित्य (भाग-2)

'आधुनिक कविता'

- भारत-भारती
- कामायनी
- राम की शक्ति पूजा
- कुकुरमुत्ता
- कुरुक्षेत्र
- असाध्य वीणा
- ब्रह्मराक्षस
- अकाल और उसके बाद
- बादल को घिरते देखा है
- हरिजन गाथा

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: CSHL06

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC)

हिन्दी साहित्य

प्रश्नपत्र–2 (खण्ड–क)

पद्य साहित्य (भाग–2)

'आधुनिक कविता'

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष: 011-47532596, 87501 87501
टोल फ्री : **1800-121-6260**
Web: www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

UPSC DLP

विषय सूची (Contents)

6. भारत-भारती (मैथिलीशरण गुप्त) 7-24

6.1 परिचय 7

6.2 संवेदना पक्ष 7

6.3 शिल्प 13

6.4 भारत-भारती (व्याख्या हेतु महत्वपूर्ण काव्यांश) 14

7. कामायनी (जयशंकर प्रसाद) 25-61

7.1 कामायनी: कथासार 25

7.2 कामायनी का दर्शन 28

7.3 कामायनी का रस निर्णय/अंगीरस 30

7.4 कामायनी की प्रतीकात्मकता/रूपक-तत्व 31

7.5 कामायनी: अन्योक्ति या समासोक्ति 34

7.6 कामायनी: मानव मन एवं मानवता के विकास की कहानी 35

7.7 कामायनी में मिथक, इतिहास और कल्पना का प्रयोग 36

7.8 कामायनी का महाकाव्यत्व 37

7.9 कामायनी में श्रद्धा और इड़ा के चरित्र 40

7.10 कामायनी: एक असफल कृति 42

7.11 मुक्तिबोध द्वारा कामायनी की समीक्षा 44

7.12 दिनकर द्वारा कामायनी की समीक्षा 44

7.13 कामायनी के समरसता संदेश की प्रासंगिकता 46

7.14 कामायनी में प्रकृति वर्णन तथा प्रकृति के कोमल व प्रलयंकारी रूप 48

7.15 कामायनी: बिंब योजना 49

7.16 व्याख्या अभ्यास: कामायनी 50

7.17 कामायनी (व्याख्या हेतु महत्त्वपूर्ण काव्यांश) 52

8. राम की शक्तिपूजा, कुकुरमुत्ता (निराला) **62-104**

8.1.1 राम की शक्तिपूजा : कविता 62

8.1.2 राम की शक्तिपूजा की केंद्रीय संवेदना 'सीता की मुक्ति' है 70

8.1.3 राम की शक्तिपूजा की केन्द्रीय संवेदना 'शक्ति की मौलिक कल्पना' है 72

8.1.4 राम की शक्तिपूजा में शक्ति की मौलिक कल्पना क्या है? 74

8.1.5 राम की शक्तिपूजा व राष्ट्रीय स्वाधीनता आंदोलन 76

8.1.6 निराला का आत्मसंघर्ष और राम की शक्ति पूजा 78

8.1.7 'वह एक और मन रहा राम का जो न थका'- 'शक्तिपूजा' की केंद्रीय संवेदना है 80

8.1.8 राम की शक्तिपूजा में सत्य-असत्य, धर्म-अधर्म का शाश्वत संघर्ष 81

8.1.9 राम की शक्तिपूजा के आधार पर निराला की भक्ति भावना 82

8.1.10 राम की शक्तिपूजा में कवि की कल्पनाओं की भूमिका 83

8.1.11 राम की शक्तिपूजा: महाकाव्यात्मक औदात्य से संपन्न लंबी कविता 84

8.1.12 राम की शक्तिपूजा की भाषा 86

8.1.13 राम की शक्ति पूजा में नाटकीयता 87

8.1.14 निराला की चरित्र-चित्रण कला 90

8.1.15 छायावादी विशेषताओं के संदर्भ में राम की शक्ति पूजा 91

8.1.16 राम की शक्तिपूजा: 'शक्ति काव्य का प्रतिमान' 93

8.1.17 व्याख्या अभ्यास: राम की शक्तिपूजा 95

8.1.18 राम की शक्तिपूजा (व्याख्या हेतु महत्त्वपूर्ण काव्यांश) 97

8.2.1 कुकुरमुत्ता : कविता **105-126**

8.2.2 कुकुरमुत्ता : परिचय 116

8.2.3 कुकुरमुत्ता: संवेदना पक्ष 117

8.2.4 कुकुरमुत्ता: शिल्प पक्ष 120

8.2.5 कुकुरमुत्ता: राम की शक्तिपूजा का अगला स्वाभाविक चरण है 121

8.2.6 व्याख्या अभ्यास: कुकुरमुत्ता 122

8.2.7 कुकुरमुत्ता (व्याख्या हेतु महत्त्वपूर्ण काव्यांश) 124

9. कुरुक्षेत्र (रामधारी सिंह दिनकर) **127-139**

9.1 दिनकर: एक परिचय 127

9.2 दिनकर के प्रबंध काव्यों का संक्षिप्त परिचय 127

9.3 कुरुक्षेत्र का युद्ध दर्शन 129

9.4 कुरुक्षेत्र में मानववादी विचार 131

9.5 कुरुक्षेत्र का काव्यरूप 132

9.6 कुरुक्षेत्र (व्याख्या हेतु महत्त्वपूर्ण काव्यांश) 134

10. असाध्य वीणा (अज्ञेय) **140-173**

10.1 असाध्यवीणा : कविता 140

10.2 असाध्यवीणा: कथानक का स्रोत 149

10.3 असाध्यवीणा: मूल संवेदना 149

10.4 असाध्यवीणा: अज्ञेय की रचना दृष्टि/काव्यशास्त्रीय दृष्टि 153

10.5 असाध्यवीणा तथा अज्ञेय पर दार्शनिक प्रभाव 155

10.6 असाध्यवीणा: शिल्प पक्ष 158

10.7 'आंगन के पार द्वार' का नामकरण 162

10.8 असाध्यवीणा में सृजनात्मक रहस्यवाद 163

10.9 असाध्यवीणा 'मौन से स्वर' और 'स्वर से मौन' की यात्रा है 164

10.10 असाध्यवीणा में व्यक्ति और समाज का संबंध 165

10.11 व्याख्या अभ्यास: असाध्यवीणा 168

10.12 असाध्यवीणा (व्याख्या हेतु महत्त्वपूर्ण काव्यांश) 170

11. ब्रह्मराक्षस (मुक्तिबोध) **174-196**

11.1 ब्रह्मराक्षस : कविता 174

11.2 ब्रह्मराक्षस : परिचय 177

11.3 ब्रह्मराक्षस कविता के प्रमुख प्रतीक 177

11.4 ब्रह्मराक्षस संवेदना पक्ष 178

11.5 'चांद का मुँह टेढ़ा है' नाम की सार्थकता 183

11.6 ब्रह्मराक्षस: शिल्प पक्ष 184

11.7 क्या मुक्तिबोध के काव्य की सबसे बड़ी उपलब्धि उनकी फैन्टेसी है? 188

11.8 ब्रह्मराक्षस कविता में कवि ब्रह्मराक्षस का सजल-उर-शिष्य क्यों होना चाहता है? 190

11.9 व्याख्या अभ्यास: ब्रह्मराक्षस 191

11.10 ब्रह्मराक्षस (व्याख्या हेतु महत्त्वपूर्ण काव्यांश) 193

12. अकाल और उसके बाद, बादल को घिरते देखा है, हरिजन-गाथा (नागार्जुन) 197-216

12.1.1 अकाल और उसके बाद : कविता 197

12.1.2 अकाल और उसके बाद : संवेदना पक्ष 197

12.1.3 अकाल और उसके बाद: शिल्प पक्ष 199

12.2.1 बादल को घिरते देखा है : कविता **200**

12.2.2 बादल को घिरते देखा है : संवेदना पक्ष 201

12.2.3 बादल को घिरते देखा है: शिल्प पक्ष 203

12.3.1 हरिजन गाथा : कविता **205**

12.3.2 हरिजन गाथा : संवेदना पक्ष 208

12.3.3 हरिजन गाथा: शिल्प पक्ष 211

12.3.4 नागार्जुन जनकवि हैं 212

12.3.5 नागार्जुन (व्याख्या हेतु महत्त्वपूर्ण काव्यांश) 214

अध्याय
6

भारत-भारती (मैथिलीशरण गुप्त)

6.1 परिचय

'भारत-भारती' राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की प्रसिद्ध रचना है, जिसका प्रणयन उन्होंने 1912 ई. में किया। इससे पूर्व वे 1909 ई. में 'रंग में भंग' लिख चुके थे। 'जयद्रथ वध' भी इसी दौर की रचना है। ध्यातव्य है कि उनकी अन्य प्रसिद्ध रचनाएँ- 'द्वापर', 'नहुष', 'पंचवटी', यशोधरा', 'साकेत', 'किसान' आदि बाद की रचनाएँ हैं। 'भारत- भारती' उनके शुरुआती साहित्यिक जीवन की रचना है, किन्तु प्रभाव की दृष्टि से यह अन्य सभी रचनाओं पर भारी पड़ती है।

गुप्त जी ने इस रचना का उद्देश्य यह बताया है कि वे हिन्दू समाज के उद्‌बोधन के लिये कोई रचना लिखना चाहते थे। वे भूमिका में ज़िक्र करते हैं कि *"श्रीमान राजा रामपाल सिंह जी ने उनसे अनुरोध किया था कि जिस प्रकार उर्दू में हाली की रचना की मुसद्‌दस है, वैसी ही उद्‌बोधनपरक रचना हिन्दुओं के लिये की जानी चाहिये।"* 1907 ई. में आचार्य द्विवेदी ने भी 'सरस्वती' में एक लेख लिखा था- 'कवि और कविता', जिसमें उन्होंने कहा था कि उर्दू के हाली, नज़ीर और आज़ाद जैसा कोई कवि हिन्दी में भी होना चाहिये जो भारतीय समाज को उद्‌बुद्ध कर सके।

'भारत-भारती' अपने प्रभाव में अत्यंत सफल रही। कहा जाता है कि इसे पढ़ने के लिये दक्षिण भारत के लोगों ने भी हिन्दी सीखी। कुछ लोगों ने इसे *'हिन्दी की बिन्दी'* कहा। उमाशंकर जोशी ने इसे *'आधुनिक युग की गीता'* कहा।

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं- *"वह (भारत- भारती काव्य) सोते हुओं को जगाने वाला है, भूले हुओं को ठीक राह पर लाने वाला है, निरुत्साहितों को उत्साहित करने वाला है xxx यह स्वदेश प्रेम उत्पन्न कर सकता है।"* आचार्य हज़ारीप्रसाद द्विवेदी कहते हैं कि *"भारत-भारती' ने तत्कालीन शिक्षित जनचित्त की आशा-आकांक्षा को बुभुक्षित होने से बचाया। इसने किसी बड़े आदर्श को प्रतिष्ठित तो नहीं किया, लेकिन जनचित्त को उसके प्राचीन गौरव की कहानी सुनाकर सजग व साकांक्ष बनाया।"*

'भारत-भारती' की प्रशंसा 'अज्ञेय' ने भी की। वे लिखते है कि *"भारतीयता की खोज का जैसा प्रयास 'भारत-भारती' में दिखाई देता है, वैसा किसी अन्य रचना में नहीं। 'भारत-भारती ने जिस तरह समाज के हर वर्ग को छुआ, संवेदना के हर स्तर को झकझोरा, और भावनामूलक, बौद्धिक व आध्यात्मिक सभी प्रकार के सरोकारों की पुष्टि की, वह अद्वितीय है।"*

'भारत-भारती' नवजागरण की चेतना का काव्य है। विचारकों में विवाद है कि इसमें सुनाई पड़ने वाला स्वर नवजागरण का है या पुनर्जागरण का? इसके लेखन के समय तक नवजागरण अपने चरम स्तर पर पहुँचने लगा था। राजा राममोहन राय, महादेव गोविन्द रानाडे, स्वामी दयानंद सरस्वती व स्वामी विवेकानन्द जैसे समाज सुधारक अपने-अपने नज़रिए से नवजागरण की धारणा प्रस्तुत कर चुके थे। जहाँ दयानन्द सरस्वती अपने अतीत के स्वर्णिम पक्ष को अत्यधिक महत्व दे रहे थे, वहीं विवेकानन्द भारतीय अतीत की महानता के साथ पश्चिमी भौतिकवाद का समन्वय करने में लगे थे। इसी सांस्कृतिक माहौल ने उस मानसिकता का निर्माण किया, जिसकी अभिव्यक्ति 'भारत-भारती' में हुई है। इसमें भी नवजागरण के विभिन्न स्वर सुनाई देते हैं। कहीं-कहीं आर्य समाज की अतीतप्रियता का स्वर मुखर हो जाता है तो कहीं-कहीं पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान को सीखने की तड़प गहरी हो जाती है। इसी द्वन्द्वात्मक मानसिकता से मैथिलीशरण गुप्त ने 'भारत-भारती' की रचना की है।

6.2 संवेदना पक्ष

'भारत-भारती' तीन खंडों में विभक्त रचना है- अतीत खंड, वर्तमान खंड तथा भविष्यत् खंड। तीनों खंडों के माध्यम से मैथिलीशरण गुप्त ने 'हम कौन थे', 'क्या हो गए हैं' और 'क्या होंगे अभी' इन तीनों तत्वों का सूक्ष्म विवेचन किया है। यदि विस्तार की दृष्टि से देखें तो अतीत खंड अत्यंत व्यापक है जो लगभग आधी रचना को समेटता है, वर्तमान खंड उससे कुछ कम है, जबकि भविष्यत् खंड बहुत कम है।

भीतर अलौकिक भाव हो, बाहर जगत् का कर्म्म हो,
प्रभु-भक्ति, पर-हित और निश्छल नीति ही ध्रुव धर्म्म हो।। (138)

शब्दार्थ– षड्रिपु = काम, क्रोध आदि छः मनोविकार। वर्म्म = कवच। **ध्रुव** = अडिग।

हमारी मनुष्यता का उद्देश्य स्वावलम्बन होना चाहिये, अपने चरित्र रूपी कवच से हमें काम, क्रोध आदि छः मनोविकारों से संघर्ष करना चाहिये। हमारे भीतर आध्यात्मिक भाव हो, और बाहर कर्त्तव्यपरायणता हो। ईश्वर की भक्ति, दूसरों का हित और सज्जनता ही हमारा अडिग धर्म होना चाहिये।

(47) *उपलक्ष के पीछे कभी विगलित न जीवन-लक्ष्य हो,*
जब तक रहें ये प्राण तन में पुण्य का ही पक्ष हो,
कर्त्तव्य एक न एक पावन नित्य नेत्र-समक्ष हो।
सम्पत्ति और विपत्ति में विचलित कदापि न वक्ष हो।। (139)

शब्दार्थ– उपलक्ष = छोटा लक्ष्य, **वक्ष** = हृदय।

हमें छोटे उद्देश्यों की पूर्ति के कारण जीवन के उद्देश्य से भटकना नहीं चाहिये, जब तक हम जीवित रहें हमारा शरीर पुण्य में ही लगा रहे। हमेशा हमारी आँखों के सामने कोई-न-कोई पवित्र कर्त्तव्य अवश्य रहे। सुख और दुख दोनों में ही हम कभी विचलित नहीं हों।

(48) *उस वेद के उपदेश का सर्वत्र ही प्रस्ताव हो,*
सौहार्द और मतैक्य हो, अविरुद्ध मन का भाव हो!
सब इष्ट फल पावें परस्पर प्रेम रखकर सर्वथा;
निज यज्ञ-भाग समानता से देव लेते हैं यथा।। (140)

शब्दार्थ– इष्ट = इच्छित। **निज** = अपना।

सभी लोग वेद के उपदेशों पर चलें। सब में एकता और सौहार्द की भावना हो, कोई वैर भाव न हो। हमेशा आपस में प्रेम रखकर सभी इच्छित सफलता प्राप्त करें, ठीक उसी प्रकार जैसे देवता यज्ञ में अपना हिस्सा समानता से लेते हैं, दूसरों के भाग को नहीं हड़पते।

अभ्यास हेतु प्रश्न

1. "भारत-भारती' की राष्ट्रीय चेतना हिंदू जातीयता पर अवलंबित है।" इस कथन के संदर्भ में अपना मत सोदाहरण प्रस्तुत कीजिये। **U.P.S.C. (Mains) 2017**
2. स्वतंत्रता-संग्राम के व्यापक परिप्रेक्ष्य में मैथिलीशण गुप्त की 'भारत-भारती' की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए। **U.P.S.C. (Mains) 2016**
3. मैथिलीशरण गुप्त की आधुनिक हिंदी कविता के विकास में जो भूमिका है उसे स्पष्ट कीजिये। **U.P.S.C. (Mains) 2015**
4. क्या आप समझते हैं कि 'भारत-भारती' में व्यक्त कवि के कतिपय विचार पुराने पड़ गए हैं और उनसे सहमत होना कठिन है। इस संदर्भ में 'भारत-भारती' की प्रासंगिकता पर विचार कीजिये। **U.P.S.C. (Mains) 2014**
5. आज के संदर्भ में 'भारत-भारती' का विवेचन कहाँ तक संगत प्रतीत होता है? विवेचना कीजिये। **U.P.S.C. (Mains) 2012**
6. नवजागरण के मूलभूत तत्त्वों की अभिव्यक्ति 'भारत-भारती' में किस प्रकार हुई है? समीक्षा कीजिये। **U.P.S.C. (Mains) 2004**

अध्याय
7

कामायनी (जयशंकर प्रसाद)

7.1 कामायनी: कथासार

'कामायनी' की कथा 15 सर्गों में विभक्त है। इन सर्गों के माध्यम से कथा का विकास इस प्रकार हुआ है-

1. **चिंता सर्ग:** इसमें देव सभ्यता के विध्वंस के बाद अकेले बचे मनु की चिंताओं की अभिव्यक्ति है। देव सभ्यता में हर प्रकार का सुख व आनंद उपलब्ध था जो प्रलय के कारण नष्ट हो गया। अतीत की स्मृतियाँ मनु को बार-बार बेचैन करती हैं। चिंता सर्ग की शुरुआत ही उसके दुख से हुई है-

"हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर बैठ शिला की शीतल छाँह,
एक पुरुष भीगे नयनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह।।"

इस सर्ग में मनु की मूल चिंता यही है कि जीवन अत्यंत नश्वर या नाशवान् है। निम्नलिखित पंक्ति में जीवन की क्षणभंगुरता का भाव साफ दिखता है-

"जीवन तेरा क्षुद्र अंश है व्यक्त नील घन माला में,
सौदामिनी संधि सा सुन्दर क्षण भर रहा उजाला में।।"

2. **आशा सर्ग:** इस सर्ग में सुबह होने के बाद का वर्णन है। इसकी शुरुआत निम्नलिखित पंक्ति से होती है-

"उषा सुनहले तीर बरसती जयलक्ष्मी सी उदित हुई।"

धीरे-धीरे बर्फ पिघलने लगती है और मनु की निराशा भी खत्म होने लगती है। वे प्रकृति के सौंदर्य पर मोहित होकर सुन्दर कल्पनाएँ करने लगते हैं-

"आह! कल्पना का सुन्दर वह जगत मधुर कितना होता।"

3. **श्रद्धा सर्ग:** यह 'कामायनी' का सबसे महत्वपूर्ण सर्ग माना जाता है। इसकी शुरुआत श्रद्धा के आगमन से होती है जो कि गंधर्वों के देश की कन्या है और ललित कलाओं के आकर्षण के कारण हिमालय की ओर आई है। उसे देखते ही मनु को हर्षपूर्ण विस्मय होता है-

"एक झिटका सा लगा सहर्ष, निरखने लगे लुटे से, कौन।"

इसके बाद श्रद्धा के आंतरिक-बाह्य सौंदर्य का सुन्दर चित्रण किया गया है-

"हृदय की अनुकृति बाह्य उदार, एक लम्बी काया उन्मुक्त।"

इसके बाद श्रद्धा मनु को अपना परिचय देते हुए बताती है कि-

"भरा था मन में नव उत्साह, सीख लूँ ललित कला का ज्ञान,
इधर रह गंधर्वों के देश, पिता की हूँ प्यारी संतान।।"

इसके बाद के अंश में श्रद्धा-मनु के मध्य विस्तृत वार्तालाप होता है जिसमें श्रद्धा मनु को अपना जीवन-दर्शन बताती है। वस्तुत: यह वही जीवन दर्शन है जिसे 'प्रत्यभिज्ञा दर्शन' या 'आनंदवाद' कहते हैं और जो प्रसाद की अधिकांश रचनाओं में से उभरता है। श्रद्धा के इस दर्शन को अभिव्यक्त करने वाले प्रमुख कथन इस प्रकार हैं-

"कर रही लीलामय आनंद महाचिति सजग हुई सी व्यक्त,
विश्व का उन्मीलन अभिराम- इसी में सब होते अनुरक्त।।"
"काम मंगल से मंडित श्रेय, सर्ग इच्छा का है परिणाम,
तिरस्कृत कर उसको तुम भूल, बनाते हो असफल भवधाम।।"
"प्रकृति के यौवन काशृंगार, करेंगे कभी न बासी फूल,
मिलेंगे वे जाकर अतिशीघ्र, आह उत्सुक है उनकी धूल।।"

अध्याय
8

राम की शक्तिपूजा, कुकुरमुत्ता (निराला)

8.1.1 राम की शक्तिपूजा : कविता

रवि हुआ अस्त : ज्योति के पत्र पर लिखा अमर
रह गया राम-रावण का अपराजेय समर
आज का, तीक्ष्ण-शर-विधृत-क्षिप्र-कर वेग-प्रखर,
शतशेलसम्वरणशील, नील नभ गर्ज्जित-स्वर,
प्रतिपल-परिवर्तित-व्यूह-भेद-कौशल-समूह
राक्षस-विरुद्ध प्रत्यूह, क्रुद्ध-कपि-विषम-हूह,
विच्छुरितवह्नि-राजीवनयन-हत लक्ष्य-बाण,
लोहितलोचन-रावण मदमोचन-महीयान,
राघव-लाघव-रावण-वारण-गत-युग्म-प्रहर,
उद्धत-लंकापति मर्दित - कपि-दल-बल-विस्तर,
अनिमेष-राम-विश्वजिद्दिव्य-शर-भंग-भाव,
विद्धांग-बद्ध-कोदण्ड-मुष्टि-खर-रुधिर-स्राव,
रावण-प्रहार-दुर्वार-विकल वानर-दल-बल,
मूर्छित-सुग्रीवांगद-भीषण-गवाक्ष-गय-नल,
वारित - सौमित्र-भल्लपति अगणित-मल्ल-रोध,
गर्ज्जित-प्रलयाब्धि-क्षुब्ध-हनुमत्-केवल-प्रबोध,
उद्गीरित-वह्नि-भीम-पर्वत-कपि-चतु:प्रहर,
जानकी-भीरू-उर-आशाभर-रावण-सम्वर।

लौटे युग-दल - राक्षस-पदतल पृथ्वी टलमल,
बिंध महोल्लास से बार-बार आकाश विकल।
वानर-वाहिनी खिन्न, लख निज-पति-चरण-चिह्न
चल रही शिविर की ओर स्थविर-दल ज्यों विभिन्न।
प्रशमित है वातावरण, नमित-मुख सान्ध्य कमल
लक्ष्मण चिन्ता पल, पीछे वानर-वीर सकल।
रघुनायक आगे अवनी पर नवनीत-चरण,
श्लथ धनु-गुण है, कटिबन्ध स्रस्त तूणीर-धरण,
दृढ़ जटा-मुकुट हो विपर्यस्त प्रतिलट से खुल
फैला पृष्ठ पर, बाहुओं पर, वक्ष पर, विपुल
उतरा ज्यों दुर्गम पर्वत पर नैशान्धकार,
चमकतीं दूर ताराएँ ज्यों हों कहीं पार।

अध्याय
9

कुरुक्षेत्र (रामधारी सिंह दिनकर)

9.1 दिनकर: एक परिचय

छायावाद के समय से ही हिन्दी कविता की एक धारा राष्ट्रीय जन-जागरण की थी जिसका प्रतिनिधित्व माखनलाल चतुर्वेदी, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', भगवतीचरण वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि कर रहे थे। इसे और भी तीव्र एवं प्रखर बनाने वाले कवि रामधारी सिंह 'दिनकर' हैं, जिन्होंने आरम्भ से ही ओजस्विता एवं तेजस्विता से परिपूर्ण कविताएँ लिखीं।

रामधारी सिंह 'दिनकर' ने सर्वप्रथम गुप्त जी के 'जयद्रथ-वध' के अनुकरण पर 'प्रण-भंग' काव्य का निर्माण किया था और उसके बाद 'हुंकार', 'रसवती', 'द्वन्द्वगीत', 'रेणुका', 'सामधेनी', 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी', 'उर्वशी', 'परशुराम की प्रतीक्षा', 'बापू', 'इतिहास के आँसू', 'सीपी और शंख' आदि काव्यों की रचना की जिनमें उन्होंने आर्थिक, सामाजिक एवं धार्मिक समस्याओं की अपेक्षा देश की स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए क्रान्ति एवं विद्रोह का सिंहनाद करते हुए जन-जागरण की भावना को ही सर्वाधिक महत्व प्रदान किया तथा स्वतन्त्रता-प्राप्ति के उपरान्त देश में व्याप्त राजनीतिक समस्याओं पर अपने विचार प्रकट किये।

'हुंकार' कवि दिनकर की पहली रचना है, जिसमें विप्लव और विद्रोह की आग बरसाने वाली कविताएँ संकलित हैं। कवि का यही ओजस्वी स्वर 'रसवंती', 'द्वन्द्वगीत', 'रेणुका', सामधेनी', 'इतिहास के आँसू', 'धूप और धुआँ' आदि काव्य-संग्रहों में विद्यमान है। इन सभी कविताओं में कवि ने बड़ी दृढ़ता एवं गम्भीरता के साथ कर्म, उत्साह, पौरुष एवं उत्तेजना के गीत गाये हैं और जन-जीवन में प्राण फूँकने का कार्य किया है। कवि का यही उन्मुक्त स्वर 'कुरुक्षेत्र' प्रबन्ध-काव्य में सुनाई पड़ता है, जहाँ कवि व्यक्ति, समाज और राष्ट्र से भी ऊँचा उठकर युद्ध जैसी अन्तर्राष्ट्रीय समस्या के समाधान में प्रयत्नशील दिखाई देता है। कवि की यही ओजस्वी भावना 'रश्मिरथी' प्रबन्ध-काव्य में महावीर कर्ण के उस उपेक्षित एवं तिरस्कृत जीवन को अंकित करने में अभिव्यक्त हुई है, जो कलंकित मानवता का मूक प्रतीक बनकर हमारे सामने खड़ा है।

'रश्मिरथी' के उपरान्त कवि दिनकर की कविताओं के कई संकलन निकले, जिनमें से 'दिल्ली', 'नीम के पत्ते', 'नीलकुसुम', 'चक्रवाल', 'कविश्री', 'सीपी और शंख', 'नये सुभाषित' तथा 'परशुराम की प्रतीक्षा' प्रसिद्ध हैं। इन सभी संकलनों की कविताओं का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि कवि ने स्वतन्त्रता-प्राप्ति के उपरान्त देश की स्थिति पर भली प्रकार दृष्टिपात किया है और जन-जीवन में व्याप्त आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक विषमताओं का चित्रण किया है। उदाहरण के लिए परशुराम की प्रतीक्षा में वह दिल्लीवासी नेताओं को ललकारता हुआ कहता है-

"सकल देश में हालाहल है, दिल्ली में हाला है।
दिल्ली में रोशनी, शेष भारत में अँधियारा है।
मखमल के परदों के बाहर, फूलों के उस पार/
ज्यों का त्यों है खड़ा आज भी मरघट-सा संसार।"

9.2 दिनकर के प्रबंध काव्यों का संक्षिप्त परिचय

दिनकर के कृतित्व के मुख्य आधार उनके प्रबंध काव्य हैं। उनके अभी तक तीन प्रमुख प्रबन्ध काव्य प्रकाशित हुए हैं- 'कुरुक्षेत्र', 'रश्मिरथी' और 'उर्वशी'। ये तीनों प्रबन्ध काव्य कविवर दिनकर की सम-सामयिक विचारधारा के साथ-साथ उनके जीवन-दर्शन के भी द्योतक हैं और इनमें युग का प्रतिबिम्ब भी पूर्णतया परिलक्षित होता है।

कुरुक्षेत्र पर विस्तृत चर्चा से पूर्व हम शेष दोनों प्रबंध काव्यों पर संक्षिप्त विचार करेंगे।

अध्याय
10

असाध्य वीणा (अज्ञेय)

10.1 असाध्यवीणा : कविता

आ गये प्रियवंद! केशकम्बली! गुफा-गेह!
राजा ने आसन दिया। कहा:

"कृतकृत्य हुआ मैं तात! पधारे आप।
भरोसा है अब मुझको
साध आज मेरे जीवन की पूरी होगी!"

लघु संकेत समझ राजा का
गण दौड़े। लाये असाध्य वीणा,
साधक के आगे रख उसको, हट गये।
सभा की उत्सुक आँखें
एक बार वीणा को लख, टिक गयीं
प्रियंवद के चेहरे पर।

"यह वीणा उत्तराखंड के गिरि-प्रान्तर से
–घने वनों में जहाँ तपस्या करते हैं व्रतचारी–
बहुत समय पहले आयी थी।
पूरा तो इतिहास न जान सके हम:
किन्तु सुना है
वज्रकीर्ति ने मंत्रपूत जिस
अति प्राचीन किरीटी-तरु से इसे गढ़ा था–
उसके कानों में हिम-शिखर रहस्य कहा करते थे अपने,
कंधों पर बादल सोते थे,
उसकी करि-शुंडों-सी डालें
हिम-वर्षा से पूरे वन-यूथों का कर लेती थीं परित्राण,
कोटर में भालू बसते थे,
केहरि उसके वल्कल से कंधे खुजलाने आते थे।
और–सुना है–जड़ उसकी जा पहुँची थी पाताल-लोक,
उसकी गंध-प्रवण शीतलता से फण टिका नाग वासुकि सोता था।

उसी किरीटी-तरु से वज्रकीर्ति ने
सारा जीवन इसे गढ़ा:
हठ-साधना यही थी उस साधक की–
वीण पूरी हुई, साथ साधना, साथ ही जीवन-लीला।"

अध्याय
11

ब्रह्मराक्षस (मुक्तिबोध)

11.1 ब्रह्मराक्षस : कविता

शहर के उस ओर खंडहर की तरफ़
परित्यक्त सूनी बावड़ी
के भीतरी
ठण्डे अंधेरे में
बसी गहराइयाँ जल की...
सीढ़ियाँ डूबीं अनेकों
उस पुराने घिरे पानी में...
समझ में आ न सकता हो
कि जैसे बात का आधार
लेकिन बात गहरी हो।

बावड़ी को घेर
डालें खूब उलझी हैं,
खड़े हैं मौन औदुम्बर।
व शाखों पर
लटकते घुग्घुओं के घोंसले
परित्यक्त, भूरे, गोल।
विगत शत पुण्य का आभास
जंगली हरी कच्ची गंध में बसकर
हवा में तैर
बनता है गहन संदेह
अनजानी किसी बीती हुई उस श्रेष्ठता का जो कि
दिल में एक खटके-सी लगी रहती।

बावड़ी की इन मुंडेरों पर
मनोहर हरी कुहनी टेक
बैठी है टगर
ले पुष्प तारे-श्वेत
उसके पास
लाल फूलों का लहकता झौंर–
मेरी वह कन्हेर...
वह बुलाती एक ख़तरे की तरफ़ जिस ओर
अंधियारा खुला मुँह बावड़ी का
शून्य अम्बर ताकता है।

बावड़ी की उन गहराइयों में शून्य
ब्रह्मराक्षस एक पैठा है,
व भीतर से उमड़ती गूंज की भी गूंज,
हड़बड़ाहट-शब्द पागल से।
गहन अनुमानिता
तन की मलिनता
दूर करने के लिए, प्रतिपल
पाप-छाया दूर करने के लिए, दिन-रात
स्वच्छ करने–
ब्रह्मराक्षस
घिस रहा है देह
हाथ के पंजे, बराबर,
बाँह-छाती-मुँह छपाछप
खूब करते साफ़,
फिर भी मैल
फिर भी मैल!!

और...होठों से
अनोखा स्तोत्र, कोई क्रुद्ध मंत्रोच्चार,
अथवा शुद्ध संस्कृत गालियों का ज्वार,
मस्तक की लकीरें
बुन रहीं
आलोचनाओं के चमकते तार!!
उस अखण्ड स्नान का पागल प्रवाह...
प्राण में संवेदना है स्याह!!

अध्याय
12

अकाल और उसके बाद, बादल को घिरते देखा है, हरिजन-गाथा (नागार्जुन)

12.1.1 अकाल और उसके बाद : कविता

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।
दाने आए घर के अंदर कई दिनों के बाद
धुआँ उठा आँगन से ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठी घर भर की आँखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखें कई दिनों के बाद।

12.1.2 अकाल और उसके बाद : संवेदना पक्ष

'अकाल और उसके बाद' 1952 ई. में रचित एक अत्यंत लघु कविता है जिसमें नागार्जुन ने अकाल की मार्मिक स्थिति तथा अकाल समाप्त होने की खुशियों के संश्लिष्ट चित्र प्रस्तुत किए हैं। यह कविता अपने सारतत्व में समाजवादी यथार्थवाद के मूल्यों को धारण करती है हालांकि कुछ प्रगतिवादियों ने इस पर विचारधारा से विचलित होने के कुछ आक्षेप भी किए हैं। वस्तुत: यह कविता इस बात का प्रमाण है कि नागार्जुन समाजवाद की चेतना को स्वीकारते हैं किंतु उसकी यांत्रिकता से नहीं बंधते।

'अकाल और उसके बाद' भूख की स्थिति के वर्णन की कविता है। नागार्जुन स्पष्टत: मानते हैं कि मनुष्य की सारी चेतना, सारे विचार और विचारधाराएँ तभी जन्म लेती हैं जब उसका पेट भरा होता है। भूखे पेट न ईश्वर का भजन होता है, न ही विचारधाराओं का निर्माण। यह कविता अपने आरंभिक अर्द्धांश में भूख के प्रभावों को व्यक्त करती है–

"कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास,
कई दिनों तक कानी कुतिया सोई उनके पास,
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त,
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त।"

कविता की सुंदरता इसमें है कि यहाँ जो भूख दिखती है, वह सिर्फ मनुष्य की नहीं है बल्कि उसके साथ उसके पर्यावरण में शामिल अन्य प्राणियों की भी है। प्रकृति यहाँ सिर्फ उद्दीपन विभाव के रूप में या वातावरण निर्माण के लिए नहीं आई है अपितु मानव और विभिन्न प्राणियों के साझे दु:ख यहाँ दिखाए गए हैं। यहाँ छायावाद की सुकोमल और सुकुमार प्रकृति नहीं है बल्कि वह प्रकृति है जो ग्रामीण जीवन में सक्रिय भाग लेती है। छायावाद की दृष्टि से यह वर्णन अकाव्योचित लग सकता है किन्तु सहजता की दृष्टि से यही प्रकृति वास्तविक लगती है। यहाँ प्रकृति लाई गई वस्तु नहीं है। यहाँ तो वही प्रकृति उपस्थित है जो जीवन में सचमुच विद्यमान है। छिपकलियाँ भूखी हैं इसलिए दीवार पर गश्त लगा रही हैं; चूहे दाने ढूंढकर थक गए हैं इसलिए शिकस्त हो गए हैं; कौआ भोजन की उम्मीद में है इसलिए चोंच से पंख खुजला रहा है। इस कविता में प्रकृति का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है 'कानी कुतिया'। इस शब्द का प्रयोग करना ही उदात्त तथा सुरुचिसम्पन्न

डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी तथा फ्लोचार्ट का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

Website : www.drishtiIAS.com
E-mail : online@groupdrishti.com

DrishtiIAS

YouTube Drishti IAS

drishtiias

drishtithevisionfoundation

641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009
Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456